ایاتها ٢٠ ٩٠ سُورَةُ البَلَدِ مَكِّيَّةٌ ٣٥ رکوعها ١

सूरए बलद मक्किय्या है, इस में बीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह़रबान रह़म वाला[1]

لَاۤ اُقۡسِمُ بِهٰذَا الۡبَلَدِۙ ۝١ وَ اَنۡتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الۡبَلَدِۙ ۝٢ وَ وَالِدٍ وَّ مَا

मुझे इस शह्‌र की क़सम[2] कि ऐ मह़बूब तुम इस शह्‌र में तशरीफ़ फ़रमा हो[3] और तुम्हारे बाप इब्राहीम की क़सम और उस

وَلَدَۙ ۝٣ لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ فِىۡ كَبَدٍؕ ۝٤ اَيَحۡسَبُ اَنۡ لَّنۡ يَّقۡدِرَ

की औलाद की कि तुम हो[4] बेशक हम ने आदमी को मशक़्क़त में रहता पैदा किया[5] क्या आदमी येह समझता है कि हरगिज़ उस पर

عَلَيۡهِ اَحَدٌۘ ۝٥ يَقُوۡلُ اَهۡلَكۡتُ مَالًا لُّبَدًاؕ ۝٦ اَيَحۡسَبُ اَنۡ لَّمۡ يَرَهٗۤ

وقف لازم

कोई क़ुदरत नहीं पाएगा[6] कहता है मैं ने ढेरों माल फ़ना कर दिया[7] क्या आदमी येह समझता है कि उसे किसी ने न

اَحَدٌؕ ۝٧ اَلَمۡ نَجۡعَلۡ لَّهٗ عَيۡنَيۡنِۙ ۝٨ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيۡنِۙ ۝٩ وَهَدَيۡنٰهُ

देखा[8] क्या हम ने उस की दो आंखें न बनाईं[9] और ज़बान[10] और दो होंट[11] और उसे दो उभरी चीज़ों

النَّجۡدَيۡنِۚ ۝١٠ فَلَا اقۡتَحَمَ الۡعَقَبَةَ ۖ ۝١١ وَمَاۤ اَدۡرٰٮكَ مَا الۡعَقَبَةُؕ ۝١٢ فَكُّ

की राह बताई[12] फिर बे तअम्मुल घाटी में न कूदा[13] और तू ने क्या जाना वोह घाटी क्या है[14] किसी बन्दे

1 : सूरए बलद मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, बीस आयतें, बियासी कलिमे, तीन सो बीस ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी मक्कए मुकर्रमा की 3 : इस आयत से मा'लूम हुवा कि येह अ़ज़मत मक्कए मुकर्रमा को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रौनक़ अफ़रोज़ी की बदौलत ह़ासिल हुई। 4 : एक क़ौल येह भी है कि वालिद से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और औलाद से आप की उम्मत मुराद है। (حسینی) 5 : कि ह़म्ल में एक तंगो तारीक मकान में रहे, विलादत के वक़्त तक्लीफ़ उठाए, दूध पीने दूध छोड़ने कस्बे मआ़श और ह़यात व मौत की मशक़्क़तों को बरदाश्त कर ले। 6 : येह आयत अबुल अशद उसैद बिन किल्दा के ह़क़ में नाज़िल हुई, वोह निहायत क़वी और ज़ोर आवर था और उस की त़ाक़त का येह आ़लम था कि चमड़ा पाउं के नीचे दबा लेता था दस दस आदमी उस को खींचते और वोह फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाता मगर जितना उस के पाउं के नीचे होता हरगिज़ न निकल सकता और एक क़ौल येह है कि येह आयत वलीद बिन मुग़ीरा के ह़क़ में नाज़िल हुई। मा'ना येह हैं कि येह काफ़िर अपनी क़ुव्वत पर मग़रूर मुसल्मानों को कमज़ोर समझता है। किस गुमान में है ! अल्लाह क़ादिरे बरह़क़ की क़ुदरत को नहीं जानता ! इस के बा'द उस का मक़ूला नक़्ल फ़रमाया : 7 : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत में लोगों को रिश्वतें दे दे कर ताकि ह़ुज़ूर को आज़ार पहुंचाएं। 8 : या'नी क्या उस का येह गुमान है कि उसे अल्लाह तआ़ला ने नहीं देखा और अल्लाह तआ़ला उस से नहीं सुवाल करेगा कि उस ने येह माल कहां से ह़ासिल किया किस काम में ख़र्च किया। इस के बा'द अल्लाह तआ़ला अपनी ने'मतों का ज़िक्र फ़रमाता है ताकि उस को इब्रत ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिले 9 : जिन से देखता है 10 : जिस से बोलता है और अपने दिल की बात बयान में लाता है 11 : जिन से मुंह को बन्द करता है और बात करने और खाने और पीने और फूंकने में उन से काम लेता है 12 : या'नी छातियों की कि पैदा होने के बा'द उन से दूध पीता और ग़िज़ा ह़ासिल करता रहा। मुराद येह है कि अल्लाह तआ़ला की ने'मतें ज़ाहिर व वाफ़िर हैं, उन का शुक्र लाज़िम। 13 : या'नी आ'माले सालिह़ा बजा ला कर इन जलील ने'मतों का शुक्र अदा न किया, इस को घाटी में कूदने से ता'बीर फ़रमाया इस मुनासबत से कि इस राह में चलना नफ़्स पर शाक़ है। (ابوالسعود) 14 : और उस में कूदना क्या, या'नी इस से इस के ज़ाहिरी मा'ना मुराद नहीं बल्कि इस की तफ़्सीर वोह है जो अगली आयतों में इर्शाद होती है।

www.dawateislami.net

رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ اَوۡ اِطۡعٰمٌ فِیۡ یَوۡمٍ ذِیۡ مَسۡغَبَةٍ ﴿١٤﴾ یَّتِیۡمًا ذَا مَقۡرَبَةٍ ﴿١٥﴾ اَوۡ

की गरदन छुड़ाना[15] या भूक के दिन खाना देना[16] रिश्तेदार यतीम को या

مِسۡكِیۡنًا ذَا مَتۡرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ تَوَاصَوۡا بِالصَّبۡرِ

ख़ाक नशीन मिस्कीन को[17] फिर हुवा उन से जो ईमान लाए[18] और उन्हों ने आपस में सब्र की वसिय्यतें कीं[19]

وَ تَوَاصَوۡا بِالۡمَرۡحَمَةِ ﴿١٧﴾ اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ الۡمَیۡمَنَةِ ﴿١٨﴾ وَ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا

और आपस में मेहरबानी की वसिय्यतें कीं[20] येह दहनी तरफ़ वाले हैं[21] और जिन्हों ने हमारी आयतों

بِاٰیٰتِنَا هُمۡ اَصۡحٰبُ الۡمَشۡـَٔمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَیۡهِمۡ نَارٌ مُّؤۡصَدَةٌ ﴿٢٠﴾ ع

से कुफ़्र किया वोह बाईं तरफ़ वाले[22] उन पर आग है कि उस में डाल कर ऊपर से बन्द कर दी गई[23]

ع ١٥

اٰیاتها ١٥ — ٩١ سُوۡرَةُ الشَّمۡسِ مَكِّیَّةٌ ٢٦ — رکوعها ١

सूरए शम्स मक्किय्या है, इस में पन्दरह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَ الشَّمۡسِ وَ ضُحٰهَا ﴿١﴾ وَ الۡقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ﴿٢﴾ وَ النَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ﴿٣﴾

सूरज और उस की रोशनी की क़सम और चांद की जब उस के पीछे आए[2] और दिन की जब उसे चमकाए[3]

15 : गु़लामी से। ख़्वाह इस त़रह़ हो कि किसी गु़लाम को आज़ाद कर दे या इस त़रह़ कि मुकातब को इतना माल दे जिस से वोह आज़ादी ह़ासिल कर सके या किसी गु़लाम को आज़ाद कराने में मदद करे या किसी असीर या मद्यून के रिहा कराने में इआ़नत करे और येह मा'ना भी हो सकते हैं कि आ'माले सालिह़ा इख़्तियार कर के अपनी गरदन अ़ज़ाबे आख़िरत से छुड़ाए। (روح البیان) **16 :** या'नी क़ह़त़ व गिरानी के वक़्त कि इस वक़्त माल निकालना नफ़्स पर बहुत शाक़ और अज्रे अ़ज़ीम का मूजिब होता है। **17 :** जो निहायत तंगदस्त और दरमांदा (नाचार), न उस के पास ओढ़ने को हो न बिछाने को। ह़दीस शरीफ़ में है : यतीमों और मिस्कीनों की मदद करने वाला जिहाद में सई़ करने वाले और बे तकान शब बेदारी करने वाले और मुदाम (पाबन्दी के साथ) रोज़ा रखने वाले की मिस्ल है। **18 :** या'नी येह तमाम अ़मल जब मक़्बूल हैं कि अ़मल करने वाला ईमानदार हो और जब ही उस को कहा जाएगा कि घाटी में कूदा और अगर ईमानदार नहीं तो कुछ नहीं सब अ़मल बेकार। **19 :** मा'सियतों से बाज़ रहने और ता़अ़तों के बजा लाने और उन मशक़्क़तों के बरदाश्त करने पर जिन में मोमिन मुब्तला हो। **20 :** कि मोमिनीन एक दूसरे के साथ शफ़्क़तो मह़ब्बत का बरताव करें। **21 :** जिन्हें उन के नामए आ'माल दाहने हाथ में दिये जाएंगे और अ़र्श के दाहने जानिब से जन्नत में दाख़िल होंगे। **22 :** कि उन्हें उन के नामए आ'माल बाएं हाथ में दिये जाएंगे और अ़र्श के बाईं जानिब से जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे। **23 :** कि न उस में बाहर से हवा आ सके न अन्दर से धूआं बाहर जा सके। **1 :** ''सूरतुश्शम्स'' मक्किय्या है इस में एक रुकूअ़, पन्दरह आयतें, चव्वन कलिमे, दो सो सेंतालीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी गु़रूबे आफ़्ताब के बा'द तुलूअ़ करे, येह क़मरी महीने के पहले पन्दरह दिन में होता है। **3 :** या'नी आफ़्ताब को ख़ूब वाज़ेह़ करे क्यूं कि दिन नूरे आफ़्ताब का नाम है तो जितना दिन ज़ियादा रोशन होगा उतना ही आफ़्ताब का जुहूर ज़ियादा होगा क्यूं कि असर की कुव्वत और उस का कमाल मुअस्सिर के कुव्वतो कमाल पर दलालत करता है या येह मा'ना हैं कि जब दिन दुन्या को या ज़मीन को रोशन करे या शब की तारीकी को दूर करे।

www.dawateislami.net